नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

बचपन को हिंसा से बचाना होगा

अहमदाबाद और गाजियाबाद की हालिया घटनाओं ने हर अभिभावक और शिक्षक को चिंता में डाल दिया है. अहमदाबाद में एक छात्र ने अपने ही सीनियर की चाकू मारकर हत्या कर दी. वहीं गाजियाबाद में बच्चों के बीच विवाद मारपीट तक जा पहुंचा और बच्चा चोरी की अफवाहों से लेकर अपहरण तक के मामले सामने आए. यह तस्वीर बताती है कि आज के बच्चे तनाव, आक्रोश और असुरक्षा के बीच पल रहे हैं.दरअसल सवाल यह है कि हालात इस कदर बिगड़े क्यों ? जवाब साफ है- माता-पिता बच्चों को समय नहीं दे पा रहे हैं. व्यस्त जीवन, आर्थिक दबाव और मोबाइल की दुनिया ने परिवार के संवाद को कमजोर कर दिया है. बच्चे अपनी समस्याएं और सवाल मां-बाप से साझा करने के बजाय इंटरनेट और सोशल मीडिया की ओर भागते हैं. वहां उन्हें मिलता है हिंसक गेम्स, झूठी शान और आक्रामक भाषा का असर. नतीजा यह कि छोटी सी बहस भी हिंसा का रूप ले लेती है. इस संबंध में हमें समय रहते सचेत होना होगा. हर स्कूल में काउंसलर और मनोवैज्ञानिक हों, ताकि बच्चों को भावनात्मक सहारा मिल सके.

पाठ्यक्रम में संवाद और जीवन कौशल की शिक्षा शामिल हो.सरकार को बच्चों के लिए ऑनलाइन गेम्स और सोशल मीडिया पर सख्त नियम बनाने चाहिए. जैसे कि बनाए भी जा रहे हैं.परिवारों को रोजाना बच्चों के साथ बैठकर समय बिताना होगा, केवल अंक और करियर की चिंता नहीं, बल्कि उनके मन की बात भी सुननी होगी.मोहल्ला स्तर पर बाल सुरक्षा समितियां बनें और बच्चों के लिए मानसिक स्वास्थ्य मिशन शुरू हो. दरअसल,यह केवल अपराध रोकने की बात नहीं है, बल्कि आने वाले समाज को सुरक्षित बनाने की जिम्मेदारी है. अगर हमने अभी बच्चों के मन की परवाह नहीं की, तो आने वाले सालों में हिंसा और हताशा का तूफान हमारे सामने होगा.बचपन मासूमियत और स्नेह का नाम है. हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह पहचान बरकरार रहे.बहरहाल, इन घटनाओं का विश्लेषण करते हुए हमें सबसे पहले यह स्वीकार करना होगा कि बच्चे हिंसक पैदा नहीं होते, उन्हें परिस्थितियां हिंसक बना रही हैं. बचपन में गुस्से की ऊर्जा और जिज्ञासा होती है, जिसे सही दिशा में ले जाना परिवार और समाज की जिम्मेदारी है, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि आज की व्यस्त और प्रतिस्पर्धी जीवनशैली में मां-बाप बच्चों को समय नहीं दे पाते. कामकाज की आपाधापी, आर्थिक दबाव और सामाजिक दिखावे की दौड़ में बच्चों के साथ संवाद और आत्मीयता का रिश्ता कमजोर हो गया है.

जब बच्चे अपने सवालों और भावनाओं के लिए माता-पिता को अनुपस्थित पाते हैं, तो वे सहारा इंटरनेट, वीडियो गेम्स और सोशल मीडिया में खोजते हैं. यह आभासी दुनिया उन्हें असली जीवन से काटकर हिंसा, आक्रामकता और अवास्तविक कल्पनाओं की गिरफ्त में ले जाती है. गेम्स में दिखाई देने वाली जीतने के लिए किसी भी हद तक जाने की प्रवृत्ति, सोशल मीडिया पर दिखने वाली नकली शान और गुस्से से भरी भाषा, बच्चों की मानसिकता को प्रभावित कर रही है.यह स्थिति केवल अपराध नियंत्रण या पुलिस की सख्ती से नहीं सुधरेगी. हमें बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर उतना ही ध्यान देना होगा, जितना उनके पढ़ाई-लिखाई और करियर पर देते हैं.

समाज को यह भी समझना होगा कि बच्चे हमारी महत्वाकांक्षाओं के बोझ तले दबकर न तो जिम्मेदार बनेंगे और न ही खुशहाल. उन्हें समझ, धैर्य और प्रेम की जरूरत है. अहमदाबाद और गाजियाबाद की घटनाएं हमें चेतावनी देती हैं कि यदि हमने बच्चों के मानसिक संसार को अनदेखा किया, तो आने वाला समाज हिंसा, हताशा और अविश्वास की खाई में धकेल दिया जाएगा. परिवार, स्कूल और समाज—तीनों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि बचपन मासूमियत और स्नेह से भरा रहे, न कि चाकू और आक्रोश से.

सिंधु की पुकार

संप्रभुता की वापसी और गौरव की बहाली

अर्जुन राम मेघवाल
केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

> अब, मोदी सरकार इस ऐतिहासिक भूल को सुधारने की दिशा में एक और निर्णायक एवं साहसिक कदम उठा रही है. भारत ने अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अपने संप्रभु अधिकारों का प्रयोग करते हुए, सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) को तब तक के लिए स्थगित कर दिया है जब तक कि पाकिस्तान विश्वसनीय और अंतिम रूप से सीमा पार आतंकवाद को अपना समर्थन देना छोड़ नहीं देता. प्रधानमंत्री मोदी जी का स्पष्ट आह्वान राष्ट्रीय हितों को कमजोर करने वालों के लिए एक कड़ी चेतावनी है- आतंकवाद और बातचीत साथ-साथ नहीं चल सकते; पानी और खून साथ-साथ नहीं बह सकते. यह कदम पिछली नीतियों से अलग हटकर एक साहसिक और ऐतिहासिक बदलाव का प्रतीक है. यह केवल एक कूटनीतिक पुनर्संतुलन भर नहीं है, बल्कि अपने संसाधनों और किसानों के हितों एवं संबंधित हितधारकों की आजीविका के अवसरों की रक्षा करने के भारत के संप्रभु अधिकार का एक दृढ़ रणनीतिक दावा है - जो पाकिस्तान की ओर से आने वाले लगातार सीमा पार खतरों के सामने राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत को सर्वोपरि रखता है.

मानसून शब्द पूरे भारत में खुशी और गर्व का संचार करता है. यह नवाचार, नवीनीकरण और राष्ट्र के आर्थिक इंजन को तत्काल गति प्रदान करने का प्रतीक है. भारत की भौगोलिक स्थिति, प्रचुर वर्षा के साथ मिलकर, इसकी नदियों को पुनर्जीवित करती है और देशभर में जल संसाधनों का विस्तार करती है. यह प्रगति के मौसम का प्रतीक है और स्वतंत्रता दिवस समारोहों के साथ मिला दिए जाने पर देशभक्ति की एक अनूठी भावना का संचार करता है. लाल किले की प्राचीर से, प्रधानमंत्री के संबोधन ने एक बार फिर आकांक्षी नागरिकों के लिए एक ऐसा खाका पेश किया जो एक विकसित भारत के निर्माण के व्यापक लक्ष्य को साकार करने का मार्ग प्रशस्त करता है.

संसद के इस विशेष मानसून सत्र की शुरुआत में, प्रधानमंत्री ने इसे भारत का गौरवशाली सत्र बताया था. भारतीय सैनिकों का शौर्य, ऑपरेशन सिंदूर की सफलता, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के कारखानों पर निर्णायक प्रहार और सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) का स्थगन—ये सब भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति के सबूत हैं और राष्ट्रीय मानस पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं. फिर भी, सभी मुद्दों पर खुलकर चर्चा के लिए सरकार के राजी होने के बावजूद, विपक्ष ने बाधा डालने का रास्ता चुना और व्यापक जनहित की कीमत पर विचार-विमर्श को राजनीतिक नौटंकी में सीमित कर दिया.

देश अरसे से स्वार्थ को राष्ट्रीय हित से ऊपर रखने की कांग्रेस की पुरानी आदत का बोझ ढोता चला आ रहा है. विभाजन की दुखद विभीषिका से लेकर नेहरूवादी कूटनीति की महंगी पड़ने वाली विफलताओं तक, इतिहास गवाह है कि कैसे इन फैसलों ने भारत की मूल अवधारणा को ही कमजोर कर दिया. सिंधु जल संधि (1960) पर बारीकी से गौर करने पर, जनता और देश के विकास की कीमत पर तुष्टिकरण व अति-उदारता की एक ऐसी कहानी सामने आती है, जिसने राष्ट्रीय विकास की संभावनाओं को निरंतर बाधित किया. यह घोर विडंबनापूर्ण है कि भारत के विकास से जुड़े हितों का त्याग एक ऐसे राजनीतिक आकलन से प्रेरित थे जिसने अपने नागरिकों के कल्याण से ऊपर पाकिस्तान के हितों को तरजीह दी.

मूल रूप से, विश्व बैंक की मध्यस्थता से हुई सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी), सिंधु नदी प्रणाली के जल का आवंटन पाकिस्तान के पक्ष में (80:20) करती है. सिंधु नदी प्रणाली का उद्गम मुख्य रूप से भारत में है. इस संधि के तहत भारत को पश्चिमी में बहने वाली सिंधु, चिनाब और झेलम जैसी महत्वपूर्ण नदियों पर नियंत्रण छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा, जिससे वैसे व्यापक जल संसाधन छिन गए जो पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात के विशाल शुष्क एवं सूखाग्रस्त इलाकों का कायाकल्प कर सकते थे. यदि राष्ट्रीय हितों की रक्षा की जाती, तो सुव्यवस्थित जल अवसंरचना इस इलाके के संपूर्ण विकास की तस्वीर को बेहतर बना सकती थी.

हालांकि, इस महत्वपूर्ण त्याग से व्यापक कूटनीतिक लाभ मिलने की उम्मीदें भ्रामक साबित हुईं. इस संधि के प्रक्रियात्मक संचालन ने चिंताओं को और बढ़ा दिया. इस संधि पर 19 सितंबर 1960 को हस्ताक्षर किए गए थे. लेकिन इसे दो महीने बाद, नवंबर में, संसद के समक्ष रखा गया और वह भी मात्र दो घंटे की औपचारिक चर्चा के लिए. जैसे ही इस संधि से जुड़े तथ्य सामने आए, इसके विभिन्न पहलुओं की पड़ताल के बाद प्रमुख समाचार पत्रों में छपी प्रतिकूल टिप्पणियां सुर्खियों में छायी रहीं. इतने महत्वपूर्ण समझौते के प्रति संसदीय स्तर पर बरते गए इस जल्दबाजी भरे व्यवहार ने लोकतांत्रिक निगरानी, पारदर्शिता और तत्कालीन नेतृत्व की दुर्भावनापूर्ण मंशा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए. इस सीमित संसदीय पड़ताल के बावजूद, सिंधु जल संधि को भारतीय संसद में भारी विरोध का सामना करना पड़ा.

रूस ने बताया भारत को सबसे प्रिय

समय की कसौटी पर भारत-रूस मित्रता हमेशा खरी उतरी है. ऐसी स्थिति में जब अमेरिका के राष्ट्रपति भारत को रूस से तेल खरीदना बंद करने की धमकी दे रहे और टैरिफ लाद रहे हैं तभी रूस ने ट्रंप को दो टूक जवाब देते हुए कहा कि हमें भारत सबसे प्यारा है. रूस ने भारत के पक्ष में बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि रूस पहले ही भारतीय तेल खरीदारों को दाम में 5 प्रतिशत की रियायत देता है. हम उससे अपना कारोबार और भी बढ़ाएंगे. रूसी दूतावास के प्रभारी रोमन बाबुश्किन ने कहा कि हम तेल खरीद पर भारत को और भी 5 प्रतिशत की छूट दे सकते हैं बशर्ते इस पर बातचीत हो. भारत अपनी आवश्यकता का 40 प्रतिशत क्रूड ऑयल रूस से ले रहा है. यदि भारत को अमेरिकी बाजार में एंट्री में टैरिफ की वजह से दिक्कत हो रही है तो उसका रूस के बाजार में स्वागत है. वास्तव में रूस के रास्ते यूरोप को भारतीय माल की आवाजाही बिना तनाव के होगी. रूस से व्यापार बढ़ाने में सुविधा यह है कि डॉलर की जरूरत नहीं पड़ेगी. रुपए-रूबल में लेन-देन हो सकता है. रूस भारतीय माल को यूरोप में

भारत अभी रूस को 44,000 करोड़ रुपए का निर्यात और उससे 6.25 लाख करोड़ से ज्यादा का सामान आयात करता है. यदि ब्रिक्स देश (ब्राजील, रूस, भारत, चीन व द. अफ्रीका) अपनी-अपनी करेंसी में व्यापार सहयोग बढ़ा लें तो काफी हद तक डॉलर की अनिर्वायता से बचा जा सकेगा.

खपाने में मददगार होगा. फिलहाल भारत अपने लगभग 125 प्रोडक्ट रूस को बेच रहा है. इनमें मशीनें, बॉयलर, परमाणु रिएक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, ऑर्गेनिक तथा अन्य केमिकल्स का समावेश है. 2014 की तुलना में भारत अभी मोबाइल फोन 78 गुना, इंजीनियरिंग प्रोडक्ट 78 गुना और कृषि उत्पादन दोगुना निर्यात कर रहा है. दोनों देशों के बीच 6.87 लाख करोड़ रुपए का द्विपक्षीय व्यापार है जो 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रहा है. 2030 तक यह व्यापार 8 लाख करोड़ रुपए को पार कर जाएगा. -एन. श्याम

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर विशेष

आर्यभट्ट से गगनयान : भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की गौरव की गाथा

डॉ .पी .के पुरोहित

भारत ने अब तक विभिन्न देशों के लिए कुल 425 से अधिक उपग्रहों का भारत के विश्वसनीय और कुशल प्रक्षेपण यान के माध्यम से अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है. आज भारत ने अंतरिक्ष कार्यक्रमों के माध्यम से एक लम्बी छलांग लगायी है. भारत के छोटे सैटेलाइट लॉन्च उद्योग के लिए यह कदम मील का पत्थर साबित होगा एवं भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता और मजबूत होगी, जो वैश्विक अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा में एक अहम योगदान है. यह सैटेलाइट पर्यावरण की मॉनिटरिंग, आपदा प्रबंधन और तकनीकी डेमॉन्स्ट्रेशन के बारे में बताएगा.

25 जून 2025 की रात 12:01 बजे भारत के लिए एक स्वर्णिम क्षण लेकर आई. भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला ने अंतरिक्ष की ओर एक ऐतिहासिक उड़ान भरकर देश का गौरव और ऊँचा कर दिया. अमेरिका के नासा के केनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च हुए एक्सिओम-4 मिशन का हिस्सा बनकर शुभांशु शुक्ला ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ड्डस्स्) की ओर यात्रा की. इस चार सदस्यीय दल में शामिल होकर उन्होंने 18 दिन अंतरिक्ष स्टेशन पर बिताए, जहाँ उन्होंने माइक्रोग्रैविटी में वैज्ञानिक प्रयोग किए और मानव शरीर पर अंतरिक्ष के प्रभावों का अध्ययन किया. 15 जुलाई को यह मिशन सफलतापूर्वक पूरा हुआ और सभी अंतरिक्ष यात्री सुरक्षित पृथ्वी पर लौट आए. यह मिशन न केवल भारत के लिए एक गर्व का विषय है, बल्कि यह भारत के गगनयान कार्यक्रम की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है. शुभांशु की यह उड़ान एक प्रकार से भारतीय मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशनों के लिए मील का पत्थर साबित होगी. इस सफलता ने हमें दो वर्ष पूर्व की चंद्रयान-3 मिशन की गौरवशाली उपलब्धि की याद दिला दी, जिसने भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बनाया था. 23 अगस्त, 2025 को देश अपना दूसरा राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाएगा, जिसकी थीम होगी आर्यभट्ट से गगनयान- प्राचीन ज्ञान से अनंत संभावनाओं तक.

दो साल पहले, 23 अगस्त, 2023 को शाम लगभग 6 बजे, दुनिया भर के वैज्ञानिक समुदाय के साथ-साथ हर भारतीय की साँसें थम सी गई थीं यह वह पल था जब हम सभी अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की लम्बी छलाँग के साक्षी बने थे. जब चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर भारतीय समय अनुसार सायं 06:04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतर चुका था. सभी की आंखे नम थी, जो इस बात की साक्षी थी की भारत उस दिन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचने वाला पहला देश बन गया है और रूस, अमेरिका और चीन के बाद चंद्रमा पर लैंडिंग करने वाला चौथा देश बना चुका है. इस ऐतिहासिक उपलब्धि का सम्मान करने के लिए, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में घोषित किया. निसंदेह अंतरिक्ष दिवस भारत में साइंस एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अध्ययन कर रहे स्टूडेंट्स, वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को अंतरिक्ष के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा, और यही इस दिवस की सार्थकता भी होगी.

चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण 14 जुलाई 2023 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से हुआ और 5 अगस्त 2023 को यह सफलतापूर्वक चंद्र कक्षा में प्रवेश कर गया, जिसमें एक लैंडर और एक रोवर शामिल थे लेकिन इसमें ऑर्बिटर नहीं था . इससे पहले, भारत ने 2019 में चंद्रयान-2 मिशन भेजा था, जो चंद्र कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित हुआ लेकिन विक्रम लैंडर, लैंडिंग से ठीक पहले अपने पथ से भटक गया और संपर्क टूट गया; इसके बावजूद इसका ऑर्बिटर चंद्रमा की परिक्रमा करता रहा और वैज्ञानिक उपकरणों के साथ काम करता रहा. इसरो ने चंद्रयान-2 की असफलताओं से सीख लेकर नई ऊर्जा और तकनीक के साथ चंद्रयान-3 को सफल बनाया. भारत का पहला चंद्र मिशन चंद्रयान-1 था, जिसका मून इम्पैक्ट प्रोब 14 नवंबर 2008 को चंद्र सतह पर उतरा और भारत चंद्रमा पर झंडा लगाने वाला चौथा देश बना. चंद्रयान-1 ने चंद्रमा पर पानी के संकेत खोजे, जिन्हें नासा के उपकरणों ने भी पुष्टि की, और इस मिशन ने 29 अगस्त 2009 को संचार टूटने के बाद अपना कार्य समाप्त किया.

अंतरिक्ष के रहस्य व रोमांच किसी भी व्यक्ति को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) से जुड़े लोगों की कहानी भी कुछ इसी प्रकार की है. इसरो की सफल वैज्ञानिक यात्रा को कागज पर कलमबद्ध करना समुद्र किनारे की रेत को मुट्ठी में पकड़ने की कोशिश की तरह है.

-लेखक एनआईटीटीटीआर भोपाल में प्रोफेसर एवं डीन साइंस हैं एवं भारतीय अंटार्कटिक अभियान में वैज्ञानिक के रूप में कार्य कर चुके है.

निशानेबाज

वोट चोरी पर चलती चर्चा हंगामा है क्यों बरपा?

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, जबसे कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बीजेपी और चुनाव आयोग पर मिलीभगत से वोट चोरी का आरोप लगाया है, हमें गुलाम अली की गजल याद आने लगी है- हंगामा है क्यों बरपा, चोरी तो नहीं की है, डाका तो नहीं डाला! अपने बचाव के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त चाहें तो राहुल को यह मशहूर गजल सुना सकते हैं.

हमने कहा, सीईसी का काम गजल सुनाना नहीं है. उन्होंने साफ कह दिया कि वोट चोरी का आरोप बेतुका व बेबुनियाद है! इसके लिए राहुल हलफनामा दें या फिर माफी मांगें.% पड़ोसी ने कहा, %निशानेबाज, कितनी ही चोरियां ऐसी होती हैं जिनकी पुलिस थाने में रिपोर्ट नहीं लिखाई जाती. हीरोइन गाती है- चुरा। लिया है तुमने जो दिल तो, नजर नहीं चुराना सनम ! जिनके घरों में भ्रष्टाचार से कमाई गई बेहिसाबी दौलत रहती है वह चोरी की रिपोर्ट दर्ज नहीं कराते या चोरी गई रकम को काफी कम करके बताते हैं. दिल्ली में जज यशवंत वर्मा के घर में लगी आग

से नोटों के बंडल जल गए. यदि पहले ही कोई चोर चुराकर ले जाता तो उसके काम आते. लोग भ्रष्टाचार को लेकर इतना शोर मचाते हैं लेकिन देश का पैसा देश में ही रहता है. भ्रष्ट मंत्री, अधिकारी, दलाल, ठेकेदार भी तो अपने ही देश के ही हैं. लक्ष्मी चंचल होती है. इस हाथ का पैसा उस हाथ जाता है.

हमने कहा, वोट चोरी का आरोप लगाने वालों को समझना चाहिए कि चोरी के और भी कई प्रकार होते हैं जैसे बिजली चोरी, पानी चोरी, सरकारी फंड की चोरी! अतिक्रमण करने वाले जमीन की चोरी करते हैं. लोग नदी-तालाब पाटकर वहां भी मकान बना डालते हैं. चोरी की जमीन पर झोपड़पट्टी बनती है. फुटपाथ चुराकर दुकानें लगा ली जाती हैं. लोग इनकम टैक्स, सेल्स टैक्स की चोरी करते हैं. सड़क बनाने की रकम चुराने वाले इंजीनियर-ठेकेदारों की चोरी तब उजागर हो जाती है जब कुछ ही महीनों के भीतर सड़क में गहरे गड्ढे मुंह खोल देते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, प्रेमी-प्रेमिका भी एक-दूसरे का दिल चुराते हैं. हीरो गाने लगता है- चुरा के दिल मेरा गोरिया चली !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12001 - डॉ. सागर खादीवाला

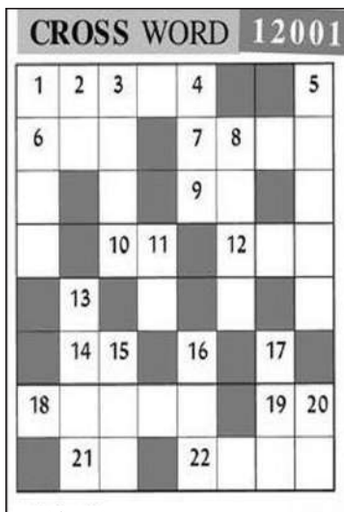

बाएं से दाएं
1. विश्वास उत्पन्न करनेवाला 6. बहन का लड़का 7. एक प्रकार का सुगंधित बढ़िया चावल 9. जंगल, अरण्य (सं.) 10. एक देव योनि जिसके राजा कुबेर हैं 12. पंकज, पद्म 14. पीड़ा, वेदना, दुख 18. जो सतर्क न हो 19. नया, नूतन 21. वस्त्र, चीरने से बनी दरार 22. बुरा काम करने वाला (सं.)

ऊपर से नीचे
1. बंटा हुआ, पृथक किया हुआ, बंटवाया हुआ (सं.) 2. कुत्ता, एक छप्पय छंद (सं.) 3. एक ही जाति या वर्ग के (लोग) 4. दाब, दबाने की क्रिया या भाव 5. रेलगाड़ी बस वायुयान आदि के आने तक प्रतीक्षा करने वाले यात्रियों के बैठने का स्थान 8. पागल होना, पागलों जैसी बातें करना 11. समय का सबसे छोटा मान, पल का चौथाई भाग, अवसर 13. अर्जुन (दाएं तथा बाएं हाथों से सुगमतापूर्वक तीर चला सकने के कारण ही अर्जुन का यह नाम पड़ा) 15. स्थावर, शनिवार 16. जन्म देने वाली 17. स्वर्ण, धतूरा (सं.) 20. क्षत्रियों की एक उपाधि (सं.)

Solution 12000

सु	ले	ख		गं	गा	ज	ली
ल		ब	क	वा	द		ला
झा	ल	र	दा	र		ता	व
ना	ता		चि		मा	ल	ती
	प	र्व	त	मा	ला		
सी	ता			र	मा	कों	त
मां		म	हा	का	ल		री
त	म		ला	ट		टी	का

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी, पद एवं स्थान परिवर्तन के योग हैं, शारीरिक कष्ट का सामना करना पडेगा, भौतिक सुख प्राप्त होगा, उत्तरदायित्वों को सम्हालने की आवश्यकता है, वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, यात्रा से कष्ट होगा, वर्ष के अन्त में विवाद एवं मतभेद हो सकते हैं, आय में सुधार होगा, भाईयों का सहयोग रहेगा.

मेष और वृश्चिक वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये रचनात्मक प्रयास सार्थक होंगे, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है, दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि होगी, पद एवं प्रभाव बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, अपने कार्यों के प्रति सजग रहने वाला परोपकारी तथा दयालु स्वभाव का होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. नौकरी में अच्छी सफलता प्राप्त करेगा. माता पिता को सुखी रखेगा.

मेष- जोखिम के कार्यों से दूर रहें. चापलूस लोगों के कारण परेशानी होगी. पारिवारिक सुखों की प्राप्ति हागी. कामकाज में मानसिक रूप से व्यस्त रहना होगा.

वृषभ- बच्चों के केरिअर और पढ़ाई की चिंता रहेगी. शांति से अच्छे समय का इंतजार करें. आलस्य का अनुभव होगा. कामकाज के प्रति मन में उदासीनता रहेगी.

मिथुन- समय की मांग के अनुसार काम में बदलाव करना पड़ सकता है. संतान पक्ष से सहयोग रहेगा. आपके मनोनुकूल कार्यक्रम बनने का योग है.

कर्क- प्रतियोगी परीक्षा को लेकर चिंता रहेगी. पारिवारिक समस्या के समाधान के अवसर बढ़ेंगे. उत्तरदायित्वों की पूर्ति होगी. स्थान परिवर्तन की संभावना है.

सिंह- आपको अधिकारी की कटौती का मलाल रहेगा. मित्रों की सलाह पर विचार करें. नवीन योजनाओं का विस्तार होगा. प्रगतिवर्धक समाचार मिलेंगे.

कन्या- सुविधा के सामान पर खर्च अधिक होगा. कामकाज में शिथिलता रहेगी. अरूचि का अनुभव होगा. अतिथि आगमन का योग है. व्यय पर नियंत्रण रखें.

तुला- देखरेख के अभाव में कोई अच्छी योजना हाथ से निकल सकती है. धैर्य से काम लेना लाभकारी है. महिला जाति की सलाह लाभदायक रहेगी.

वृश्चिक- युवाओं को बेहतर अवसर प्राप्त होंगे. मन की अभिलाषा पूरी होगी. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. कुटुम्बियों से सहयोग मिलेगा. मित्र मिलन का योग है.

धनु- देनदारी के चलते आपसी विवाद बढ़ेगा. नजदीकी लोगों के कारण परेशानी होगी. कार्यों में अच्छी सफलता प्रापत होगी. भाई के साथ संबंधों में मधुरता रहेगी.

मकर- आप अपनी बात मनवाने का भरपूर प्रयास करेंगे. भूमि संपत्ति वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें. कोर्ट के कार्यों में आपके पक्ष में निर्णय होंगे.

कुम्भ- आपके करीबी लोग आपको मजधार में छोड़ देगें. प्रेम संबंधी मामलों में प्रगाढ़ता आयेगी. शिक्षा से संबंधित कामकाज में परिश्रम अधिक करना होगा.

मीन- भावनाओं पर काबू रखकर व्यवहारिक निर्णय करें. अविवाहित वैवाहिकबंधन में बंध सकते हैं. शत्रु वर्ग पराजित होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

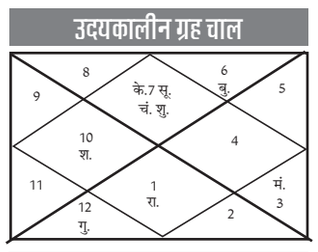

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण अमावस्या शनिवासरे दिन 11/8, मघा नक्षत्रे रात 1/35, परिघ योगे दिन 3/5, नाग करणे सू.उ. 5/38 सू.अ. 6/22, चन्द्रचार सिंह, पर्व- स्नानदान अमावस्या, कुशोत्पाटनी अमावस्या, शु.रा. 5, 7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण अमावस्या को मघा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा और शेयर, बिनौला, जीरा, धनियां, लालमिर्च, हल्दी, मैथी के भाव में तेजी का रूख रहेगा. गुड, खांड में नरमी की चाल चलेगी. भाग्यांक 3715 है.

SUDOKU 7133

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7132

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9